

## मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता

यह एडिटरियल 24/03/2022 को 'हदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "Is the Push For Foundational Numeracy and Literacy Pro-Poor?" लेख पर आधारित है। इसमें केवल खंडों या अंतराल में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को सीखने की अवधारणा से संबंधित मुद्दों पर बात की गई है।

### संदर्भ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy- NEP) 2020 'तत्काल राष्ट्रीय मशिन' के रूप में सभी बच्चों के लिये मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (Foundational Literacy and Numeracy- FLN) की प्राप्ति को प्राथमिकता देती है। शिक्षा मंत्रालय के 'बेहतर समझ और संख्यात्मक ज्ञान के साथ पढ़ाई में प्रवीणता हेतु राष्ट्रीय पहल- नपुण' (National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy- NIPUN) भारत मशिन 2011 में इसी प्रकार के दिशा-निर्देश जारी किये गए हैं। यद्यपि यह पहल वस्तुनिष्ठ रूप से एक सकारात्मक सुधार है, लेकिन इसकी रूपरेखा और संचालन में कुछ ऐसी कमियाँ वदियमान हैं जसि पर विचार किये जाने की आवश्यकता है। पढ़ने की प्रवीणता या अंकगणतीय कौशल अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि सीखने या लर्नगि को केवल खंडों या अंतराल में पढ़ना तथा अंकगणतीय कौशल की महारत के रूप में चत्तिरों के द्वारा देनकर सीखना अन्य समग्र घटकों की अनदेखी और कल्पना शक्ति की कमी को प्रकट करेगा।

### मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN)

- FLN को मोटे तौर पर एक बच्चे की बुनियादी पाठ पढ़ने और आधारभूत गणति के सवाल (जैसे- जोड़ और घटाव) को हल करने की उसकी क्षमता के रूप में संकल्पित किया गया है।
  - मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता NEP- 2020 के प्रमुख वषियों में से एक है।
- वर्ष 2026-27 तक कक्षा 3 के बच्चों के लिये सार्वभौमिक साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण के साथ वर्ष 2021 में नपुण-भारत कार्यक्रम शुरू किया गया।
  - इस कार्यक्रम में केंद्र प्रायोजित योजना 'समग्र शिक्षा' के तत्वावधान में सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में राष्ट्रीय-राज्य-ज़िला-प्रखंड-स्कूल स्तर पर स्थापित एक पाँच-स्तरीय कार्यान्वयन तंत्र की परिकल्पना की गई है।
- FLN के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि पढ़ने-लिखने और संख्याओं के साथ बुनियादी क्रियाएँ कर सकने की क्षमता (अर्थात FLN) भविष्य की सभी स्कूली शिक्षा और आजीवन सीखने हेतु एक आवश्यक आधार तथा अनिवार्य शर्त है।
  - 'ग्रेड 3 स्तर पर बच्चों के लिये फाउंडेशनल लर्नगि स्टडी' विभिन्न भारतीय भाषाओं में समझ विकसित करने के साथ पढ़ सकने की उनकी क्षमता के लिये मानक स्थापित करने में सक्षम होगी।
  - यह एक निश्चित गति, सटीकता और समझ के साथ आयु-उपयुक्त पाठ (ज्ञात और अज्ञात पाठ दोनों) पढ़ सकने की क्षमता के साथ-साथ मूलभूत संख्यात्मक कौशल का आकलन करेगा।

### FLN से संबद्ध समस्याएँ

- **रॉट-लर्नगि/रटने की सक्षमता को बढ़ावा:** लंबे समय से रॉट-लर्नगि (Rote-Learning) को भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल समस्या के रूप में देखा गया है जहाँ तथ्यों की अप्रासंगिक पुनरावृत्ति, बिना प्रश्न के समीक्षा तथा सोच की सामान्य कमी लर्नगि के समग्र रूपों के प्रति बाधाकारी हैं।
  - एक नगिरानी प्रणाली जो FLN के आधार पर प्रदर्शन की जाँच करती है, राज्यों और स्कूलों को खराब परीक्षा परिणामों से बचने हेतु रॉट-लर्नगि को अधिकाधिक बढ़ावा दे सकती है।
  - मानकीकृत आकलन (Standardised Assessments) में वफिल होने का यही भय रॉट-लर्नगि को बढ़ावा देता है और 'टीचिंग टू टेस्ट' (Teaching To The Test) का मार्ग प्रशस्त करता है- जहाँ शिक्षण, संसाधन और समय सभी को वास्तविक लर्नगि से दूर केवल बेहतर मूल्यांकन की ओर पुनर्निर्देशित कर दिया जाता है।
- **'फाल्स फ्रेमगि':** मूलभूत या 'फाउंडेशनल' शब्द यह प्रकट करता है कि बच्चे में किसी भी अन्य लर्नगि से पहले संख्यात्मकता और साक्षरता के कुछ पहलुओं का प्रवेश होना चाहिये। एक अच्छी शिक्षा प्रणाली संख्यात्मकता और साक्षरता सुनिश्चित करती है, लेकिन उन्हें ही अपना एकल या प्राथमिक उद्देश्य नहीं बनाती।
  - केवल इन्हीं बुनियादी बातों पर ध्यान केंद्रित करने से न केवल संदर्भहीन और रॉट-लर्नगि लर्नगि का जोखिम पैदा होता है, बल्कि इसका यह

भी अर्थ नकिलता है कि समृद्ध शिक्षा और आलोचनात्मक सोच को इसके बाद महत्त्व दिया जाता है।

- बर्ना प्रश्न कथि रटना और प्रासंगिकता को समझे बर्ना गणना करना कसि भी संभावति आलोचनात्मक सोच की नीव नही हो सकते, बल्कि इससे दूर ही ले जा सकते हैं।

- **वर्भेद का नरिमाण:** भले ही यह दावा कथि जाता है कि FLN का लक्ष्य सभी बच्चों को दायरे में लेता है, लेकिन इसकी प्राथमिकता वशिष रूप से ग्रामीण और वंचति पृष्ठभूमि के बच्चों के लथि है; इस प्रकार यह भारतीय शकिषा के भीतर दो अलग-अलग वर्गों का सृजन करता है—
  - पहला वर्ग, जहाँ संभरांत एवं उच्च शुल्क वाले नजीी स्कूलों के बच्चों को समृद्ध एवं समग्र सामग्री पर ध्यान केंद्रति करने का अवसर मलिता है और दूसरा वर्ग जहाँ कम शुल्क या नःशुल्क नजीी/सरकारी स्कूलों में वंचति पृष्ठभूमि के बच्चे जो इन मूलभूत कौशल से बहुत आगे नहीं बढ़ पाएँगे।
  - यह कुछ बच्चों के अत्यधिक कुशल और अभजित व्यवसायों के लथि अधिक उपयुक्त है जबकि अन्य बच्चों के लथि सामान्य साक्षर होने तक सीमति है और इस प्रकार यह नमिन आय वाले व्यवसायों के एक सीमति समूह के सामने उल्लेखनीय दीर्घावधिक प्रभावों को उत्पन्न करेगा।

## आगे की राह

- **समानांतर दृष्टिकोण:** वर्तमान शकिषा प्रणाली के माध्यम से नीति निर्माताओं के साथ-साथ लोगों की 'बेसकिक्स फर्स्ट एंड क्रटिकल थकिंग आफ्टरवार्ड्स' (Basics first and Critical Thinking Afterwards) की इस भ्रामक अनुक्रमिक समझ को दूर करना चाहथि और एक नया दृष्टिकोण ढूँढना चाहथि जहाँ आधारभूत शकिषा और आलोचनात्मक सोच समानांतर रूप से आगे बढ़ती हो।
  - बच्चों को परीक्षा पास करने के लथि वर्षों तक FLN में महारत हासलि करने हेतु वविश नही कथि जाना चाहथि. इसके बजाय उन्हें आलोचनात्मक सोच, जजिजासा या सशक्तीकरण जैसे समकालीन शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लथि तैयार कथि जाने की आवश्यकता है।
- **शकिषक प्रशकिषण:** जलि शकिषा और प्रशकिषण संस्थान (DIETs) प्रायः उच्च रक्तिथि, अपर्याप्त धन और गंभीर बाधाओं के शकिार होते हैं, जसिसे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप उत्तरदायी कार्य नहीं कर पाते।
  - शकिषा प्रणाली के इस मुख्य कार्य के लथि एक मज़बूत सार्वजनिक क्षेत्र, पर्याप्त मानव संसाधन और एक उपयुक्त आधारभूत संरचना की आवश्यकता होती है।
  - नीति निर्माताओं को शकिषक प्रशकिषण संस्थानों के लथि बजटीय आवंटन बढ़ाने पर भी वचिर करना चाहथि और वविकाधिकार की वृद्धि एवं अधिकार प्राप्त संकाय की सुनशिचतिता के लथि अपने मशिन व जनादेश में सुधार लाना चाहथि।
- **लरनगि दृष्टिकोण का पुनरीक्षण:** कई देशों की शकिषा प्रणाली लरनगि की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के प्रयास में वृद्धिशील, कौशल-आधारति तरीकों से रीडगि व गणति का अध्यापन कराने से दूर हुई है।
  - सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शकिषण (जो बच्चों हेतु वास्तविकता संबंधी लरनगि को प्रासंगिक बनाने का प्रयास करता है) और आलोचनात्मक गणति शकिषण (जो दुनयिा को आलोचनात्मक रूप से पढ़ सकने के एक साधन के रूप में है) दुनयिा भर के स्कूलों द्वारा व्यापक रूप से मांग कथि जाने वाले कई दृष्टिकोणों में से एक है।
  - इन दृष्टिकोणों में समृद्ध, प्रासंगिक लरनगि के एक अंग के रूप में मूलभूत लरनगि एवं गणति कौशल में महारत हासलि कथि जाना शामिल है, बजाय इसके कि इन्हें ही प्राथमिक महत्त्व दिया जाए।

**अभ्यास प्रश्न:** राष्ट्रीय शकिषा नीति के तहत परकिल्पति मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता की अवधारणा से संबद्ध प्रमुख समस्याओं की चर्चा कीजथि।